नाट्य नंदिनी

"तुम जागोगे भी ? हे शिव शंकर ! मेरे उर में, हे डमरू-धर !
रुद्र रूप, नटराज भयंकर ! तुम जागोगे भी ? हे शिव शंकर !
प्रलय चरण हे ! हे दिशा-वसन ! हे कैलाशनाथ ! हे मदन-दहन !
नयन तीसरा खोलोगे भी ? हे शिव शंकर ! तुम जागोगे भी?"

विश्वंभर प्रसाद डबराल—शंभु प्रसाद बहुगुणा